बी॰ए॰ हिन्दी (प्र०), खण्ड-प्रथम अध्ययन सामग्री
डॉ॰ संतोष कुमार, सहायक प्राचार्य, हिन्दी विभाग
भारती मंडन महाविद्यालय, रहिका, मधुबनी
दिनांक :- 10.04.2021

पत्र : द्वितीय / ~~आधुनिक हिन्दी~~ प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

## कबीर के 'प्रेम' शीर्षक साखियों का भाव

**परिचय :-** कबीर जिस प्रकार 'प्रेम' के महत्ता को स्वीकार करते हैं, वह उन्हें ज्ञानी संत की अपेक्षा भक्त अधिक सिद्ध करता है। अब प्रश्न है भक्ति और प्रेम में क्या संबंध है। इस परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो ईश्वर में अनुरक्ति ही भक्ति है। जब प्रेम लौकिकता से अलौकिकता की ओर उन्मुख होता है, तब प्रेम, प्रेम न रहकर भक्ति में परिवर्तित हो जाता है। अतः स्पष्ट है कि भक्ति प्रेम का ही दूसरा नाम है।

कबीर ने प्रेम की अभिव्यक्ति विरहिणी नारी के रूप भी की है। कबीर विरह को ही प्रेम की पराकाष्ठा माना है। ~~इसलिए~~ कबीर वर्ण, जाति, धर्म और ~~सम्प्र~~ संप्रदाय के तमाम भेदों को निरस्त करते हुए प्रेम का पाठ पढ़ने का संकेत देते हैं —

"पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।

कबीर हठयोग साधना की पृष्ठभूमि से आते हैं, लेकिन उनकी साधना में प्रेम के प्रति जबर्दस्त आकर्षण है। इस प्रेम के बिना न तो कबीर की साधना पूर्ण होती है और न ही ब्रह्म के साथ योग। विरह कुछ नहीं प्रेम का ही बदला हुआ रूप है जिसमें पीड़ा और वेदना की प्रधानता होती है। विरह की आग में जलकर ही प्रेम की परिपक्वता होती है। विरह की इसी दशा में जीवात्मा का ईश्वर के प्रति अनन्य प्रेम और उसकी एकनिष्ठता अपने चरम पर पहुँच जाती है। कबीर ने अपने साखी में इसी प्रकार जीवात्मा और ब्रह्म के बीच प्रेम को परिभाषित किया है। जीवात्मा रूपी विरहिणी के लिए विरह की वेदना जब असाध्य हो जाती है, उस परिस्थिति का

वर्णन करते हुए कबीर कहते हैं —

यह तन जारौं मसि करौं, ज्यूँ धूवाँ जाइ सरग्गि।
मति वै राम दया करैं, बरसि बुझावैं अग्गि।।

अर्थात् वह विरह की आग में अपने शरीर को जला कर भस्म कर डाले ताकि इस क्रम में जो धुँआ स्वर्ग तक पहुँच सके। संभव है कि ईश्वर इस धुँएँ की अनदेखी न कर पाएँ, उनका हृदय द्रवित हो जाए और वे अपने दर्शन देकर विरह की आग को बुझा दें।

यह प्रेम की पराकाष्ठा है। जहाँ जीवात्मा खुद को नष्ट कर भी ब्रह्म को पाना चाहता है। इस तरह से कबीर ने प्रेम को भक्ति से फिर विरह से जोड़कर उसे प्रेम की ऊँचाईयों तक पहुँचाया हैं।

(नोट :- कबीर वचनावली - सं० अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' – 'नाम', 'परिचय' और प्रेम शीर्षक के अंतर्गत संकलित साखियाँ पढ़ना हैं। / अगले विचार-विषय में 'प्रेम' शीर्षक साखियों का भाव विस्तार से)